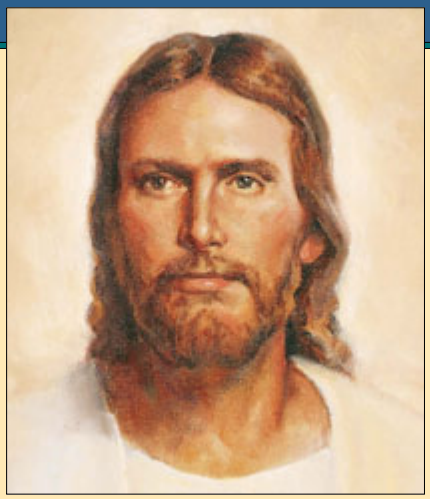

यीशु मसीह की शिक्षाएं

मानवजाति के लिए, यीशु मसीह की शिक्षाएँ जो बाईबल में है बहुत पहले से प्रेरणा का स्रोत रहीं हैं । यह है उद्धारकर्ता की शिक्षाओं का अतिरिक्त धर्मशास्त्र का एक और भाग... मॉरमन की पुस्तकः यीशु मसीह का दूसरा नियम । ये आपके जीवन में प्रेरित दिशा दिखाकर अनन्त शान्ति और खुशी लायेंगें ।

मुफ्त मॉरमन की पुस्तकः यीशु मसीह के अन्य नियम की कापी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित वेब साईट पर सम्पर्क करें या लिखें :

THE CHURCH OF
JESUS CHRIST
OF LATTER-DAY SAINTS

www.mormon.org

© 2005 Intellectual Reserve, Inc.
द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी ।
अंग्रेजी स्वीकृतिः २/०५ अनुवाद स्वीकृतिः २/०५
The Testimony of the Prophet Joseph Smith का अनुवाद
Hindi
मुख पृष्ठ पेंटिंग : *भाई जोसफ* द्वारा डेविड लिन्डस्ली
अन्तिम पृष्ठ पेंटिंग : *वह भी उठा है* द्वारा डेल पारसन

HINDI
4 02326 67294 5
32667 294

भविष्यवक्ता
जोसफ स्मिथ
की गवाही

अन्तिम दिनों के सन्तों
का यीशु मसीह का गिरजाघर

जोसफ स्मिथः परमेश्वर का भविष्यवक्ता

जब जोसफ स्मिथ १४ वर्ष की आयु के थे, वह जानना चाहते थे कि कौन से गिरजाघर का सदस्य बनना चाहिए, तब उन्होंने परमेश्वर से सच्ची प्रार्थना की । प्रार्थना के जवाब में स्वर्गीय पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह, जोसफ के सम्मुख आये और उससे कहा कि इस पृथ्वी पर यीशु मसीह का सच्चा गिरजाघर नहीं है और उन्होंने जोसफ को इसे पुनःस्थापित करने के लिये चुना है ।

उस दिन से, जोसफ परमेश्वर की सेवा में लग गए, वह अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर का संगठन का कार्य करने लगे और परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर अन्तिम दिनों में बनाने में लग गए । विश्वासी सदस्य जो इस गिरजाघर के सदस्य थे साक्षी देने लगे कि यीशु मसीह इस दुनिया का उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है । इस पृथ्वी पर यीशु अपने आज के गिरजाघर का निर्देशन भविष्यवक्ता को भविष्यवाणी देकर करता है । जोसफ स्मिथ ऐसी ही एक भविष्यवक्ता थे । यद्यपि जोसफ ने अपने जीवन के दौरान बहुत से काम पूरे किये, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यीशु मसीह का शिष्य और साक्षी बनने का उनका अनुबन्ध था । उन्होंने लिखा था, ''उसके विषय में दी गई बहुत सी गवाहियों में, यही अन्तिम गवाही है जो हम देते हैं :वह जीवित है !'' (सिद्धान्त और अनुबन्ध ७६:२२) ।

वे जिनको भविष्यवक्ताओं की गवाही पवित्र आत्मा की शक्ति से मिली थी वे कार्य की सच्चाई को जानेंगें जिसके लिये उन्हें नियुक्त गया था । वे शान्ति और प्रसन्नता के बारे में जान सकते हैं जो उद्धारकर्ता यीशु मसीह से आई थी, जिसकी जोसफ स्मिथ आराधना और सेवा करते थे ।

यह निर्णय लेने के लिए कि किस गिरजाघर को चुनना है, जोसफ मार्गदर्शन के लिए बाईबल की तरफ मुड़ा । वहाँ उस ने पढ़ा ''परमेश्वर से मांगो'' ।

कौन सा गिरजाघर सही है ?

जोसफ स्मिथ का जन्म सन् १८०५ में शेरोन, वरमाऊंट में हुआ था । उस समय जब यह घटना घटी थी वह १४ वर्ष की आयु के थे, अपने परिवार के साथ न्युयार्क में रहते थे, और गम्भीरता से विचार किया करते थे कि कौन से गिरजाघर में जाना चाहिए । जोसफ का निम्नलिखित अनुभव, उन्हीं के शब्दों में ।

इस महान उत्तेजना के समय के दौरान मेरा दिमाग गम्भीर विचार और बड़ी अशान्ति से भरा हुआ था । . . . मैं प्राय अपने आप से कहता थाः मुझे क्या करना चाहिए ? इनमें से कौन सी धार्मिक संस्था सही है, या क्या ये सब के सब गलत हैं ? अगर इन में से कोई एक सच्चा है, तो कौन सा है, और मुझे उस के बारे में कैसे पता चलेगा ?

जब मै इस कठिन दुविधा में फँसा था जो इन धर्मावलंबी दलों के विवाद से उत्पन्न हुई थीं, मैं एक दिन याकूब की पत्री को पढ़ रहा था, पहला अध्याय उसकी पाँचवी आयत जो इस तरह हैः ''पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर

से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उस को दी जाएगी ।''

कभी भी धर्मशास्त्र का कोई भी भाग मनुष्य के दिल में इतनी शक्ति से नहीं लगा जो इस समय यह मेरे दिल में लगा । इसने मेरे हृदय की भावना में बड़ी तेज गति से प्रवेश किया । मैं बार - बार इसी के विषय में गम्भीरता से विचार करने लगा, मैं जानता था कि अगर किसी व्यक्ति को परमेश्वर से बुद्धि की ज़रूरत थी तो वह मैं था, क्योंकि मुझे पता नहीं था कि क्या करना है, जब तक मुझे और अधिक बुद्धि नहीं मिल जाती जितनी मेरे पास थी, मैं कभी नहीं जान सकता; क्योंकि धर्म के विभिन्न प्रचारकों ने धर्मशास्त्र के इस अध्याय को भिन्न तरीके से समझा था जिससे किसी प्रश्न को सुलझाने में बाइबल से प्रेरणा पाने के समस्त विश्वास का नाश होता है ।

आखिरकार मैं इस नतीज़े पर पहुंचा कि मैं या तो इस अन्धकार और दुविधा में रहूँ, या फिर वैसा करू जैसे याकूब ने निर्देश दिया है कि परमेश्वर से मांगो । आखिरकार मैंने यह सकंल्प ले लिया कि मैं परमेश्वर से मांगूगा, आखिर वह मुझे बुद्धि देंगे जिस की मुझ में कमी थी जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, मुझे ऐसा करने का साहस करना चाहिए ।

जोसफ स्मिथ का पहला दिव्यदर्शन

मेरे इस निश्चय के अनुसार कि परमेश्वर से पूछो, मैं जंगल में एकांत में इसका प्रयास करने के लिए गया । वह साफ दिन की एक सुन्दर सुबह थी , वसन्त ऋतु का आगमन अठहारह सौ बीस था । यह मेरे जीवन का पहला समय था जब कि मैं ऐसा कुछ करने जा रहा था, क्योंकि इतनी उलझनों के बीच भी मैंने अभी तक मुंह से बोल कर प्रार्थना नहीं की थी ।

उनमें से एक... ने कहा, दूसरे की तरफ इशारा कर के... ''यह मेरा प्रिय पुत्र है इसकी सुनो ।''

ऐसे एकांत में पहुचने के बाद जिसे मैंने पहले से चुन रखा था, मैंने अपने चारों तरफ घुम कर देखा, और मैंने अपने आप का अकेला पाया, मैं घुटनों के बल झुका और परमेश्वर से अपने दिल की इच्छा प्रकट की । मैंने मुश्किल से ऐसा किया ही था कि तुरन्त ही मैंने अपने आप को किसी शक्ति में झकड़ा हुआ महसूस किया जिसने मुझ पर पूरी तरह से काबू पा लिया था, और इसका इतना अद्‌भुत प्रभाव मेरे ऊपर था जिससे मेरी जबान भी बंद हो गई और मेरे मुंह से शब्द नहीं निकल पा रहे थे । मेरे आसपास गहरा अन्धकार छा गया था, मुझे उस समय ऐसा लगने लगा मानो मेरी नियति का अचानक नाश होने वाला था ।

परन्तु मैं अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर से सहायता के लिये पुकारने लगा कि वह मुझे इस शैतानी शक्ति से बचाये जिसने मुझे पकड़ लिया था और उसी क्षण में जब मैं निराशा में डुबने लगा और अपने आप को नाश होने के लिए सौपने लगा . . . काल्पिनक विनाश नहीं, परन्तु अनदेखी दुनिया से किसी वास्तविक अस्तित्व की शक्ति थी, जिसके पास अद्‌भुत शक्ति थी जिसे मैने पहले कभी किसी अस्तित्व में नहीं महसूस किया था . . . अभी

वह क्षण एक बड़े भय की चेतावनी दे रहा था, मैंने देखा एक रोशनी का खम्भा जो ठीक मेरे सिर के ऊपर था, जो सूर्य की ज्योति से भी तेज़ था, जो धीरे धीरे से मुझ पर आकर ठहर गया ।

इस प्रकाश के खम्भे के मुझ पर ठहरते ही, मैंने अपने आप को शैतान के बन्धन से मुक्त पाया । जब वह प्रकाश मेरे ऊपर था मैंने उसमें दो लोगों को देखा जिनकी त्रीव ज्योति और महिमा वर्णन करना मुश्किल था, वे मेरे ऊपर हवा में खड़े थे । उनमें से एक ने मुझसे मेरा नाम लेकर पुकारा और दूसरे की तरफ इशारा करके कहा . . . ''यह मेरा प्रिय पुत्र है । इसकी बात सुनो ।''

मेरा प्रभु से पूछने का उद्देश्य यह जानना था कि कौन सा गिरजाघर सच्चा है, ताकि मैं जान सकूं कि मुझे किसमें जाना चाहिए । तुरन्त ही, मैंने अपने आप पर काबू पाया, तब मैं बोलने योग्य हुआ, तब मैंने उन लोगों से पूछा जो मेरे ऊपर ज्योति में खड़े थे, कौन सा गिरजाघर इन सब में सच्चा है (तब तक मेरे हृदय में यह बात नहीं आई थी कि सब गलत है) ...और मुझे किस में जाना चाहिए ।

मुझे जवाब मिला कि मुझे किसी से भी नहीं जाना चाहिए, क्योंकि ये सब गलत हैं; और उन व्यक्तियों ने, जो मुझे बात कर रहे थे, कहा कि उनके सिद्धान्त उनकी दृष्टि में घृणा से भरे हैं; और वो धर्म का नाटक करने वाले सब भ्रष्ट हैं; किः ''ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है, वे भक्ति का भेष धरकर केवल मनुष्यों के सिद्धान्तों की शिक्षा देते हैं, पर उसकी शक्ति को नहीं मानते हैं ।''

उन्होंने फिर मुझे रोका की मैं किसी से ना जुड़ूँ; और बहुत कुछ बातें उन्होंने मुझे से कही, जिसे मैं इस समय लिख नहीं सकता हूँ । फिर जब मैं होश में आया, तो मैंने अपने आप को पीठ के बल लेटा, स्वर्ग की तरफ देखता हुआ पाया । जब वह ज्योति चली गई, मेरे पास ताकत नहीं थी ; परन्तु अपने आप को कुछ हद तक सम्भाल कर, मैं घर लौटा ।

अत्याचार

जोसफ ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और उस समय मौजूद किसी भी गिरजाघर से नहीं जुड़े । जब उन्होंने लोंगों को अपना अनुभव बताया कि उन्होंने क्या देखा और सुना था, उनका विरोध किया गया और उन्हें सताया जाने लगा ।

मुझे जल्द ही पता चला . . . कि मेरी बताई गई कहानी से धर्म के प्रचारक उत्तेजनावश मेरे विरुद्ध पक्षपात करने लगे, और अत्याचार का एक बड़ा कारण बन गया जो लगातार बढ़ता गया; और यद्यपि मैं सिर्फ चौदह या पन्द्रह साल की आयु का निराश लड़का था, और मेरे जीवन की स्थिति उस लड़के के

समान थी जिसका इस दुनिया में कोई महत्त्व नहीं था, फिर भी उच्च पद के व्यक्तियों ने मेरे खिलाफ लोगों को भड़काने पर अधिक ध्यान दिया, और बहुत अत्याचार उत्पन्न किया; और यह सभी धार्मिक संप्रदायों में सामान्य था . . . वे सब मिल कर मुझपर अत्याचार करने लगे ।

इस के कारण मुझ पर गम्भीर असर हुआ था, और प्रायः इस के बाद से, कितनी अजीब बात थी कि एक अज्ञात लड़का जो चौदह साल की आयु से थोड़ा बड़ा और अकेला, जो अपनी मेहनत से अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अभागी था, उस समय के लोकप्रिय संप्रदायों के महान लोगों का ध्यान को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त महत्वपूर्ण चरित्र सोचा गया और उनमें इस प्रकार से अधिक कड़वाहट और गाली - गलौज के व्यवहार का कारण बना । परन्तु यह अजीब बात थी या नहीं, पर इसने मेरे अपने दुःखों का हमेशा बड़ाया था ।

फिर भी यह सच है कि मैंने दिव्यदर्शन देखा था । मैं तब से विचार करता हूँ कि मुझे पोलूस के सामान महसूस हुआ था, जब उसने अपने आप का बचाव राजा अग्रिप्पा के समाने किया था, और अपने दिव्यदर्शन के बारे में बताया था जब उसने रोशनी देखी थी और एक आवाज सुनी थी; परन्तु तब भी कुछ ही लोगों ने उस पर विश्वास किया था; कुछ ने कहा वह आज्ञाकारी नहीं है, और अन्यों ने कहा वह पागल है; उसका हँसी ठट्ठा और अपमान करने लगे । परन्तु यह सब उस दिव्यदर्शन की सच्चाई को नष्ट न कर सका । उसने दिव्यदर्शन देखा वह जानता था, उसने देखा है और स्वर्ग के नीचे सारे अत्याचार उसको दूसरे ढंग से नहीं कर सकते थे; यद्यपि लोगों ने उस पर अत्याधिक अत्याचार करे, पर वह अपनी आखरी सांस तक जानता है ! और जानता रहेगा कि उसने प्रकाश और आवाज सुनी थी जो उससे बात कर रही थी और सारी दुनिया उसे विभिन्न सोचने या विश्वास करने पर मज़बूर नहीं कर सकती थी ।

ऐसा मेरे साथ भी था मैने सच में प्रकाश देखा, और उस प्रकाश के मध्य दो व्यक्ति को मैंने देखा, वे सचमुच में मुझ से बात कर रहे थे यद्यपि इस के उपरान्त मुझसे नफरत की गई और अत्याचार किया गया मेरे यह कहने पर कि मैंने दिव्यदर्शन देखा है, यह सत्य है ; और यह कहने के लिए वे मुझे सताने लगे, मेरा अपमान करने लगे और झूठ बोलकर मेरा विरोध करने लगे तो मैं अपने हृदय में महसूस करने लगाः मुझे सच कहने पर सताया क्यों जा रहा हैं ? मैंने वास्तव में दिव्यदर्शन देखा है; और मैं कौन हूँ जो परमेश्वर के साथ अपनी तुलना करूँ या क्यों यह दुनिया मुझे उस दिव्यदर्शन का इन्कार करने को कहती है जो कि मैंने वास्तव में देखा है ? मैं जानता हूँ कि मैंने दिव्यदर्शन देखा है; और मैं यह भी जानता हूँ कि परमेश्वर जानता है और मैं इसका इन्कार नहीं कर सकता, न ही इससे डरता हूँ ; कम से कम मैं जानता था कि ऐसा करने से मैं परमेश्वर के विरुद्ध अपराध करता, और अपने आप को पाप का भागी बनाता ।

मैंने एक दिव्यदर्शन देखा; मैं यह जानता था, और मैं जानता था कि परमेश्वर जानता है, और मैं अस्वीकार नहीं कर सकता, न ही मैं ऐसा करने का साहस कर सकता हूँ ।

जहाँ तक साम्प्रदायिक दुनिया का सम्बन्ध था अब मेरे दिमाग को सन्तुष्टि मिल गयी थी . . . यह मेरा कर्त्तव्य नहीं कि उन में से किसी से जुड़ूँ, परन्तु जो मैं कर रहा था वह मैं करूँ जब तक कि मुझे आगे का निर्देशन नहीं मिल जाता । मैंने पाया कि याकूब की गवाही सत्य थी कि यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना किए सबको उदारता से देता है ।

इक्किस सितंबर एक हजार आठ सौ तेईस तक मैं अपने जीवन के कामकाज में व्यस्त रहा, हर समय तकलीफ में रहा, धार्मिक और गैर धार्मिक सभी स्तर के मनुष्यों के हाथों से बुरी तरह सताये जाने लगा, क्योंकि मैं लगातार यह कहता रहा कि मैंने दिव्यदर्शन देखा था ।

मेरे दिव्यदर्शन देखने और सन अठारह सौ तेईस के बीच के समय में . . . मुझे किसी भी धार्मिक सस्थंनों में जुड़ने के लिए मना किया गया था, क्योंकि मुझे बहुत ही छोटी सी आयु में सताया जाने लगा, उन लोगों के द्वारा जो अपने आप को मेरा मित्र कहते थे, और मुझे से अच्छा व्यवहार करते थे, और वे मुझे मोहित करने की ताक में रहते ताकि मैं उनकी बातों में आजाऊं . . . मुझे सभी प्रकार के लालचों; और समाज के सभी वगों से मिलने के लिए रोका गया था मैंने बहुत बार मुर्खतापूर्ण गलतियाँ की और अपनी युवावस्था और मानव प्रकृति की कमजोरी को दर्शाया, जिसके लिये मुझे खेद है, मैं कई तरह की लालचों से घिरा जो कि परमेश्वर की निगाह में घृणित थे । अब मैं अपने गुनाह कबूल करता हूँ, कोई यह न सोचे कि मैं किसी महान या बहुत बुरे पाप के लिए दोषी था । इस तरह के पाप करने का मिजाज मेरे स्वभाव मैं नहीं था ।

जोसफ स्मिथ के पहले दिव्यदर्शन के तीन साल बाद, परमेश्वर ने दूत मरोनी को जोसफ को यीशु मसीह के सुसमाचार की पुनास्थापन के बारे में निर्देशन देने के लिए भेजा । ज

मरोनी की भेंट

जोसफ स्मिथ ने यह कहने से मना किया कि उसने परमेश्वर को नहीं देखा उस का सताया जाना जारी रहा । २१ सितंबर १८२३ में अपने बिस्तर पर जाने के बाद, जोसफ ने प्रार्थना की कि वह प्रभु के सम्मुख अपने स्थिति को जाने । दूत मरोनी उनके सम्मुख आया ।

उपरोक्त इक्किस सितंबर की शाम को, जब मैं रात में बिस्तर पर जाने से पहले, मैंने स्वर्गीय पिता से अपने पापों की और मुर्खता की क्षमा माँगने और मुझ पर उसकी इच्छा प्रकट करने के लिए प्रार्थना की, ताकि मुझे उसके सम्मुख अपनी दशा और स्थिति का ज्ञान हो सके ; क्योंकि मुझे दिव्य प्रकटीकरण प्राप्त होने का पूरा भरोसा था, जैसे मैंने पहले पाया था ।

जब मैं परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था, तब मैंने पाया कि एक ज्योति मेरे कमरे में प्रकट हो रही थी, जो लगातार बढ़ती जा रही थी और कमरा दोपहर के ज्योति के समान हो गया, तब जन्द ही एक व्यक्ति मेरे बिस्तर के पास प्रकट हुआ, जो हवा में खड़ा था उसके पैर जमीन पर नहीं छू रहे थे ।

उसने बहुत ही सफेद ढीला वस्त्र पहना था । और ऐसी सफेदी थी जैसे मैंने पहले धरती पर कभी देखी नहीं थीं ; और मैं विश्वास करता हूँ कि धरती में कहीं भी कभी भी ऐसा चमकदार सफेद रंग किसी ने न देखा होगा । उसके हाथ नंगे थे, उसकी बाजू भी, कलाई से थोड़ा ऊपर और, ऐसी ही उसके पैर भी नंगे थे, और पांव भी, एड़ी से थोड़ा ऊपर । उसके सिर गरदन भी नंगे थे । मैंने देखा कि उसके ऊपर अन्य कोई और कपड़ा नहीं था सिवाए उस वस्त्र के, क्योंकि उसका वस्त्र खुला था, और मैं उसकी छाती देख सकता था ।

न सिर्फ उसका चोंगा ही चमकदार सफेद था, बल्कि उसका पूरा शरीर ही इतना महिमापूर्ण था जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, उसका चेहरा जैसे तेज ज्योति हो । पूरा कमरा त्रीव ज्योति से भर गया, परन्तु उतना चमकदार नहीं था जितना उस व्यक्ति के इकदम आने से चारों ओर छाया था । जब मैंने पहली

बार उसकी तरफ देखा, मैं डर गया था; परन्तु मेरा भय तुरन्त खत्म हो गया ।

उसने मुझे मेरे नाम से पुकारा, और मुझ से कहने लगा कि वह दूत है जो की परमेश्वर की तरफ से आया है, और उसका नाम मरोनी था; कि परमेश्वर के पास मेरे लिये काम हैं जो मुझे करना है; और मेरा नाम अच्छे और बुरे, हर एक राज्य, भाषा और जाति के बीच लिए लिया जाएगा, या उसका नाम अच्छे और बुरे दो तरह के लोग लेंगे ।

उसने कहा कि एक पुस्तक कहीं पर रखी गई है, सोने की पट्टियों पर लिखी हुई, जो यह इस महाद्वीप के पहले के लोगों के बारे लिखी हुई है और वह एक स्रोत है जो बताती है कि वे कहां से आए थे । उसने यह भी कहा कि अनंतकालिन सुसमाचार का पूरा होना उसमें हैं, जैसे उद्दारकर्ता ने प्रचीन लोगों को दिया था ;

८२१ ईसवी में भविष्यवक्ता मरोनी ने अपने लोगों का पवित्र लेखा पर्वत कुमोरोह में दफन कर दिया था । बाद में जब वह वापस आया पुनरूथान के रूप में, उसने जोसफ स्मिथ को प्राचीन लेख के बारे में बताया, जिसमें सुसमाचार का पूरा होने का वर्णन है जो कि उद्धारकर्ता ने प्रचीन के अमेरिका महाद्वीप में दिया था । यह अभिलेख मॉरमन की पुस्तक है ।

यह भी चाँदी के धनुषों में दो पत्थर हैं . . . और उन पत्थरों को, कवच के साथ बान्धा हुआ है, उसे ऊरीम और तुम्मीम कहते हैं . . . इन्हें पट्टियों को साथ रखा है; और इन पत्थरों को प्राचीन के भविष्यवक्ता इस्तेमाल करते थे; और परमेश्वर ने उन्हें पुस्तक का अनुवाद करने के उद्देश्य से तैयार किया था ।

मुझे यह सब बताने के बाद, उसने पुराने नियम में की गई भविष्यवाणी के उदाहरण से देना आरम्भ किया । उसने पहला उदाहरण मलाकी के तीसरे अध्याय के भाग से दिया; और उस ने चौथा अध्याय या अन्तिम अध्याय के समान भविष्यवाणी के उदाहरण दिए, जिस तरह से बाईबल में लिखा गया है इस में थोड़ा सा अन्तर हैं । पहली आयात के बदले जैसे इसे हमारी बाईबल में पढ़ा गया है उसने इस प्रकार उदाहरण दिया:

''क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी, और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएगें; और उस आने वाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि उनका पता तक न रहेगा, सेनाओं के प्रभु का यही वचन हैं ।''

और फिर, उसने पाँचवी आयात का उदाहरण दिया ''देखो, मैं एलिय्याह भविष्यवक्ता के द्वारा तुम्हें पौरोहित्य प्रकट करता हूँ प्रभु के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले ।''

उसने फिर दूसरी आयात का उदाहरण विभिन्न रूप से दिया: ''और वह पिताओं से किए वादे बच्चों के हृदय में बोएगा, और बच्चों के हृदय पिता की तरफ फेरेगा । अगर ऐसा न हो तो, पूरी पृथ्वी का नाश उसके आगमन में हो जाएगा ।

उनके अतिरिक्त, उसने यह कहकर यशायाह के ग्यारहवां अध्याय का उदाहरण दिया, कि वह लगभग पूरा होने वाला है । उसने प्रेरितों के काम की तीसरे अध्याय का बाईस और तेईसवीं आयतों का उदाहरण दिया, ठीक ठाक जैसे वे हमारे नयें नियम में है । उस ने कहा कि वही भविष्यवक्ता मसीह हैं; परन्तु वह दिन अभी तक आया नहीं है और जब ''वे जो उस की आवाज को नहीं सुनेगें, लोगों में से अलग कर दिए जाएगे,'' परन्तु वह जल्द आएगा ।

उसने योएल का दूसरा अध्याय के आठाईसवीं आयत से अन्त तक का उदाहरण दिया । उसने कहा कि यह अभी तक पूरा नहीं हुआ, परन्तु जल्द ही होने वाला है । और उसने यह भी कहा कि जब तक अन्य जातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें । उसने धर्मशास्त्र के बहुत से अन्य अंशों के उदाहरण दियें और बहुतों की व्याख्या भी करी जिन्हें यहाँ पर लिखा नहीं जा सकता ।

दुबारा, उसने मुझे कहा कि जब मुझे वह पट्टियां मिलें जिसके बारे में उसने कहा था... उसे जिस समय प्राप्त करना चाहिए वह समय अभी तक पूरा नहीं हुआ है... मुझे उसे किसी भी व्यक्ति को दिखाना नहीं चाहिए; न ही कवच को जो ऊरीम और तुम्मीम के साथ रखा है;

मेरे मस्तिष्क में दिव्यदर्शन उभर आया जिससे मैंने देखा उस जगह को जहाँ वे पट्टियाँ रखी गई थी ।

उन्हीं को दिखाना है जिनको दिखाने की मुझे आज्ञा दी गई है; अगर मैंने ऐसा किया तो मैं नष्ट हो जाऊँगा । जब वह मेरे साथ पट्टियों के बारे में बातचीत कर रहा था, तब मेरे मस्तिष्क में दिव्यदर्शन उभर आया जिससे मैं देख सका उस जगह को जहाँ वह पट्टियाँ रखी गई थी, और उसे सफाई और स्पष्ट रूप से देख सकता था और मैं उस स्थान को जानता था जब मैं दोबारा वहाँ गया था ।

इस बातचीत के बाद, मैंने कमरे में ज्योति देखी जो जल्द ही उस व्यक्ति के चारों तरफ इकट्ठी हो गई जिससे मैं बातें कर रहा था, और यह चलता रहा जब तक कमरा फिर से अन्धकारमय हो गया, सिर्फ उस के चारों तरफ को छोड़कर; तब तुरन्त मैंने देखा, जैसे वह था, ठीक ऊपर स्वर्ग में जाने का रास्ता खुला गया, और वह ऊपर उठा लिया गया जब तक कि वह अदृश्य नहीं हो गया, और कमरा वैसा ही रह गया जैसा वह स्वर्गीय ज्योति से पहले था ।

मैं उस विशेष दृश्य के बारे में गहराई से विचार करने लगा और उस असाधारण दूत के बारे में सोचकर खुश होने लगा जिसके द्वारा मुझे बताया गया था; अपने चिंतन के दौरान अचानक मैंने पाया कि मेरा कमरा फिर से ज्योतिमय हो गया, और तुरन्त, मैंने देखा, वही स्वर्गीय दूत फिर से मेरे पलंग के पास था ।

उसने आरम्भ किया, और फिर वही बातें जो उसने अपने पहले के आगमन में कही थी, बिना किसी भिन्नता के बताई; जो होने वाला था, उसने मुझे उस महान न्याय के बारे में बताया जो पृथ्वी के ऊपर आने वाला हैं, अकाल द्वारा महान बंजरपन, युद्ध और महामारी के साथ; और वे गम्भीर न्याय पृथ्वी पर इस पीढ़ी में आएंगे । इन सब बातों के बाद वह वैसे ही ऊपर उठा लिया गया जैसे पहले उठा लिया गया था ।

इस समय तक, वह मेरे मस्तिष्क में गहरी छाप छोड़ गया, कि मेरी आँखों से नींद उड़ गई मैं व्याकुलता में आश्चर्यचकित सा

पर्वत कुमोरोह लगभग तीन मील दक्षिणपूर्व स्मिथ के खेत पालमेरा, न्युयार्क में था । जोसफ के समय उत्तर का सिरा घास से ढका था, दक्षिण पेड़ों से और जगंल से ढका था । पट्टियाँ दक्षिणपश्चिम की ओर दफनाई गई थी जो ऊचाँई से दूर नहीं था । फोटोः अगस्त १९०७

लेटा उस के विषय में सोचता रहा जिसे मैंने देखा और सुना था । परन्तु क्या ही आश्चर्य था जब मैंने उसी दूत को अपने पलंग के पास पाया, वही सब कुछ दोहराते हुए जो मैंने पहले भी सुना था; उसने मुझे एक चेतावनी भी दी, बताया की शैतान मुझे लालच देने की कोशिश करेगा (क्यों कि मेरे पिता का परिवार बहुत गरीब था), की अमीर बनने के उद्देश्य से वह पट्टियों ले लूँ । उसने मुझे ऐसा करने से रोका, कहा कि मुझे उस पट्टियों को लेकर कोई और बात मस्तिष्क में नहीं लानी चाहिए परन्तु परमेश्वर की महिमा करनी है, और मुझे किसी अन्य कारण प्रभाव में नहीं आना है परन्तु उसके राज्य को बनाना है; अन्यथा वे मुझे नहीं मिल पाएगीं ।

इस तीसरे आगमन के बाद, वह वैसे ही स्वर्ग में उठा लिया गया जैसे पहले, और मैं फिर दोबारा से उस अनुभव की विचित्रता पर जो अभी अभी हुआ था पर गहराई से विचार करने लगा; जब वह स्वर्गीय दूत मेरे पास में तीसरी बार ऊपर उठा लिया गया तब मुर्गे ने बाँग दी, और मैंने पाया कि दिन निकलने वाला है, हमारी पूरी रात बातचीत में बीत गई ।

मरोनी वर्ष में एक बार वापस आता था लगभग चार वर्ष तक और युवा भविष्यवक्ता को आगे का निर्देशन दिया करता था उन चार वर्ष के बाद, जोसफ ने पट्टियाँ प्राप्त किया और मॉरमन की पुस्तक का अनुवाद आरम्भ किया ।

मैं थोड़ी ही देर में पलंग से उठा, और, वैसे ही, अपने दिनचर्या के जरूरी कामों में लग गया; परन्तु, जब मैं कार्य करने लगा जैसे अन्य समयों में करता था, मैंने पाया कि मेरी शक्ति जाती रही और मैं काम नहीं कर पा रहा हूँ । मेरे पिता जो मेरे साथ काम कर रहे थे, पाया कि मुझ में कुछ कमी सी है, और घर जाने को कहा मैंने घर की ओर जाना प्रारम्भ किया; परन्तु जहाँ हम थे मैं मैदान के बाड़ को पर नहीं कर पा रहा था, मेरी ताकत पूरी तरह से खत्म हो गई थी, और मैं असहाय मैदान में पड़ा था, और कुछ समय के लिए अचेत अवस्था में था ।

सबसे पहले बात जो मुझे याद आई, वह वो आवाज जिसने मुझे मेरे नाम से पुकारा और बात की थी । मैंने ऊपर देखा, तो वही दूत देखा मेरे सिर के ऊपर खड़ा, उसी ज्योति के साथ जैसे पहले था वह फिर से मुझ से वही वर्णन करने लगा जो वर्णन उसने इससे पहले रात में किया था, और उसने मुझे आज्ञा दी मैं कि अपने पिता को दिव्यदर्शन और आज्ञाओं के बारे में बताऊँ जो मुझे मिली हैं ।

मैंने आज्ञा का पालन किया; मैं अपने पिता की तरफ खेत में जाने को मुड़ा और सारे विषय में उन्हें बताया । उन्होंने मुझे जवाब दिया कि यह परमेश्वर की ओर से था, और बताया कि मुझे वह सब करना है जिसकी मुझे दूत ने आज्ञा दी है । मैं खेत से चला गया, और उस जगह गया जहाँ दूत ने मुझे बोला था कि पट्टियाँ रखी थी; दिव्यदर्शन की स्पष्टता के कारण जो मुझे इसके बारे में मिला था, इसलिए जैसे ही मैं उस जगह पहुँचा मुझे वह स्थान पता चल गया ।

पवित्र लेखा

मनचेस्टर के पास एक गाँव में, ओंटरीओ सुबा, न्युयार्क, के पास, पर्वतीय इलाके में, और आस पड़ोस में सब से ऊँचा है । इस पर्वत के पश्चिम केतरफ, चोटी से ज्यादा ऊपर नहीं, एक काफी बड़े पत्थर के नीचे, पट्टियाँ थी, एक पत्थर के सन्दूक में रखी थी । यह पत्थर मोटा और ऊपर से गोलाई लिये हुआ था, किनारे की तरफ पतला, इसलिए उसका बीच का भाग दिखाई देता था परन्तु चारों तरफ से मिट्टी से ढका हुआ था ।

मिट्टी को हटा देने के बाद, मैंने भार को उठाने के लिए औजार को लिया, जो मैंने पत्थर के किनारे में रख दिया, और थोड़े जोर के साथ उसे ऊपर उठा लिया । मैंने अन्दर देखा तो पट्टियों को वहाँ रखा पाया, ऊरिम और तुम्मीम और कवच को भी, जैसे उस दूत ने बताया था । जिस सन्दूक में वे रखे गए थे वह पत्थरों से, किसी प्रकार के सीमेंट से बना हुआ था । सन्दूक के नीचे दो पत्थर तीरछे एक दूसरे पर रखे गए थे, और इन्ही पत्थरों पर पट्टियाँ और अन्य वस्तु रखी गई थी ।

मैं जब उसे बाहर निकालने के लिए बढ़ा, तुरन्त ही दूत ने मुझे मना कर दिया, और फिर से बताया गया कि उसे निकालने का समय अभी तक नहीं आया, न ही सन्दूक को, अब से चार वर्ष तक वह समय नहीं आएगा; परन्तु उसने बतलाया कि मुझे उस समय से ठीक एक वर्ष बाद उसी स्थान में आना चाहिए, और वह भी वही पर मुझ से आकर मिलेगा, और मुझे यह करते रहना चाहिए जब तक की पट्टियों को निकालने का समय न आ जाये ।

वैसे ही, जैसे मुझे आज्ञा दी गई थी, मैं हर वर्ष के अन्त में वहाँ गया, और हर बार मैंने उसी दूत को वहाँ पाया, और हरबार के वार्तालाप में मैंने निर्देशन और जानकारी पाई, उस विषय में कि प्रभु क्या करना चाहते हैं, और कैसे और किस कारण से उस के राज्य का निर्देशन अन्तिम दिनों में होगा ।

इस पर्वत के पश्चिम के तरफ, चोटी से ज्यादा ऊपर नहीं, एक पर्याप्त माप के पत्थर के अन्दर, पट्टियाँ थी, एक पत्थर के सन्दूक में रखी थी ।

क्योंकि मेरे पिता की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी नहीं थी, हमें अपने हाथों से अपनी जरूरतों को काम कर के पूरी करनी पड़ती थी, रोज का काम रोज करना पड़ता था, अगर हमें मौका मिलता था । कभी तो हम घर में होते, तो कभी हम घर से दूर होते, और प्रतिदिन के कार्य करने के बाद भीहम अपना जीवन आराम से गुजार नहीं सकते थे ।

जोसफ ने अपने परिवार को आराम का जीवन देने के लिए कई नौकरियाँ करी । सन १८२५ में उन्होंने चेनयागों काउन्टी, न्युयार्क में नौकरी की थी । वहाँ वह एमा हेल से मिले, जिससे उन्होंने १८ जनवरी १८२७ में विवाह किया ।

आखिर कर पट्टियों को, ऊरमि और तुम्मीम, और कवच को लेने का समय आ पहुँचा । बाईस सितंबर के दिन, सन एक हजार आठ सौ और सत्ताईस में, वैसे ही एक और अन्य वर्ष की सम्पति हुई उस स्थान पर जहाँ वे रखी गई थी, उसी स्वर्गीय दूत के द्वारा आज्ञा के साथ मुझे दी गईः कि मैं उनका जिम्मेदार रहूँगा; अगर मैंने अपनी लापरवाही से, या अपने किसी उपेक्षा में उन्हें जाने दिया तो, मुझे इस काम से अलग कर दिया जाएगा; परन्तु अगर मैं अपने पूरे प्रयत्न से उनकी रक्षा करूँ जब तक वह, दूत उनकी मांग न करे , उनकी रक्षा की जानी चाहिए ।

मैंने तुरन्त ही उन सब का कारण जान लिया कि क्यों मुझे उन्हें सुरक्षित रखने के लिए ऐसी सख्त आज्ञाएँ मिली थी, और क्यों उस दूत ने कहा था कि मैं वो सब कर लूँ जिसकी मुझसे अपेक्षा की गई है, वह मांग करेगा । जैसे ही पता चला कि वे मेरे पास है, तब उन्हें मुझसे पाने के लिए कठोर प्रयास किए गए थे । उन्हें पाने के उद्देश्य के लिए हर प्रकार की योजना बनाई गई थी । सताया जाना पहले से अधिक गम्भीर हो गया, बहुत से लोग इस ताक में रहते थे कि अगर उन्हें अवसर मिले तो वे मुझसे उन्हें ले ले । परन्तु परमेश्वर की बुद्धि के द्वारा, वे मेरे हाथों में सुरक्षित थी, जब तक कि मैं उन बातों को पूरा नहीं कर लेता जिसकी मुझसे अपेक्षा की गई थी । व्यवस्था के अनुसार, जब दूत ने उन्हें मांगा, मैंने उनको उसे दे दिया था; और इस दिन तक, जो मई का दूसरा दिन, एक हजार आठ सौ और आठतीस है, वे उसके नियन्त्रण में हैं . . .

अप्रैल के ५वें दिन, सन १९२९, ओलिवर काऊड्री मेरे घर आया उस समय तक मैंने उसे कभी नहीं देखा था । उसने मुझ से कहा कि जहाँ मेरे पिता रहते थे वही पड़ोस में वह एक विद्यालय में पढ़ाता था और मेरे पिता उनमें से एक थे जो बच्चों को विद्यालय भेजते थे, वह कुछ समय तक उनके घर में रहा था, जब तक वह वहाँ था, परिवार ने उसे मेरे पट्टियों के प्राप्त करने की कठिनाइयों को बताया, और उसके अनुसार वह मुझसे पूछताछ करने के लिए आया था ।

श्रीमान ओलिवर काऊड्री के आगमन के दो दिन बाद (जो कि ७ अप्रैल थी) मैंने मॉरमन की पुस्तक का अनुवाद करना आरम्भ किया, और वह मेरे लिये लिखने लगा ।

अप्रैल १८२९ में जोसफ स्मिथ, और ओलिवर काऊड्री ने लेखा लिखा, परमेश्वर की शक्ति और उपहार के द्वारा मॉरमन की पुस्तक का अनुवाद करना आरम्भ हुआ । जोसफ ने अनुवाद समाप्त होने के बाद, अन्य लोगों को उन सोने की पट्टियों को देखने का अवसर मिला । उन साक्षियों ने भी अपनी गवाहियाँ लिखी, क्योंकि ''दो या तीन गवाहों के मूँह से हर एक बात ठहराई जाएगी ।'' (२ कुरिन्थियों १३:१)

पौरोहित्य की पुनः स्थापना करना

हम अपने अनुवाद के काम में लगे रहे, जब अगले महीने (मई, १८२९), हम एक दिन आदर के साथ प्रभु से प्रार्थना करने और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा के बारे में पूछताछ करने गए, जो हमने अनुवाद के अन्तर्गत पट्टियों में यह पाया था । जब हम प्रभु से प्रार्थना और प्रभु पुकार रहे, तो दूत स्वर्ग से बादलों की ज्योति के साथ नीचे आया, और हमारे ऊपर हाथ रख कर, उसने हमें यह कहकर नियुक्त कियाः

१५ मई १८२९ को जोसफ स्मिथ और ओलिवर काऊड्री को हारूनी पौरोहित्य यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के हाथ रखने से मिली थी ।

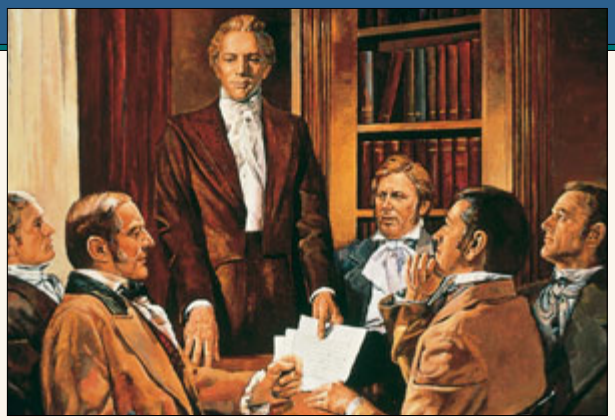

६ अप्रैल १८३० में पीटर विहटमर सिनियर के घर में अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर की स्थापना की गई । लगभग ६० व्यक्तियों की साक्षी में जब ६ आदमियों ने नई धार्मिक संस्था को स्थापित करने के लिए न्युयार्क की जरुरत को पूरा किया था ।

''अपने सेवक के ऊपर, मसीह के नाम से, मैं हारून की पौरोहित्य प्रदान करता हूँ, जिसमें स्वर्ग दूत की सेवा और पश्चाताप का सुसमाचार, और पापों की क्षमा के लिए डूबकी का बपतिस्मा देने की कुजियाँ हैं; और यह फिर कभी भी इस पृथ्वी से नहीं ली जाएगी जब तक लेवी प्रभु की भेंट धर्म से चढ़ाएगें ।''

उसने कहा कि इस हारूनी पौरोहित्य में हाथ रख कर पवित्र आत्मा का उपहार देने की शक्ति नहीं होगी, परन्तु बाद में यह हमें इसके बाद प्रदान की जाएगी; और उसने हमें आज्ञा दी कि हम जाए और बपतिस्मा लें, और मुझे यह निर्देशन दिया कि मुझे ओलिवर काऊड्री को बपतिस्मा देना चाहिए, और बाद में वह मुझे बपतिस्मा देगा ।

उस के अनुसार हम गए और बपतिस्मा लिया । मैंने उसे पहले बपतिस्मा दिया, और बाद में उस ने मुझे बपतिस्मा दिया और बाद में मैंने उसके सिर पर हाथ रखकर उसे हारूनी पौरोहित्य के लिए नियुक्त किया, बाद में उस ने अपना हाथ मुझ पर रख कर मुझे समान्य पौरोहित्य के लिए नियुक्त किया जैसे हमें आज्ञा दी गई थी ।

वह दूत जिसने हमसे उस अवसर पर मुलाकत की थी और हमें पौरोहित्य प्रदान की थी कहा था कि उसका नाम यूहन्ना था, वही जो नए नियम मे युहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहलाता था और वह पतरस, यकूब और यहन्ना के निर्देशन में कार्य कर रहा था, जिन के पास मलकिसिदक पौरोहित्य की कुजियाँ थी, उसने कहा जो पौरोहित्य आने वाले समय में हमें प्रदान की जाएगी, और मैं गिरजाघर का पहला एल्डर कहलाऊँगा, और वह (ओलिवर काऊड्री) दूसरा । यह मई का पन्द्रहवा दिन, १८२९, जब हम इस दूत के हाथों नियुक्त हुए थे और बपतिस्मा हुआ था ।

जब हम बपतिस्मे के तुरन्त बाद पानी से बाहर आये तो हमें महान और महिमा भरी आशीषों का अनुभव हुआ था जो स्वर्गीय पिता की तरफ से थी । जैसे ही मैंने ओलिवर काऊड्री को बपतिस्मा दिया, तब उस पर पवित्र आत्मा आ गई, और वह खड़े होकर बहुत सी बातों की भविष्यवाणी करने लगा जो थोड़े दिनों में होने वाली थी । और फिर से, आत्मा को पाया, जब,

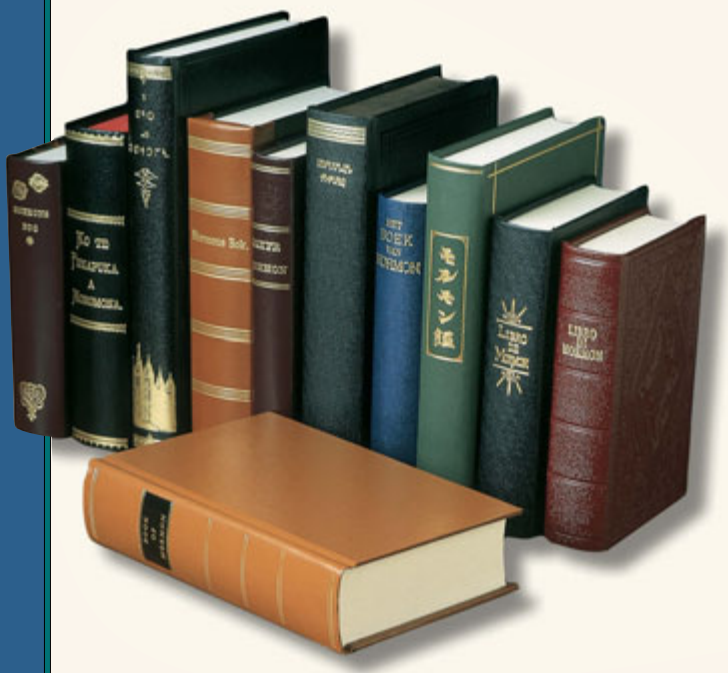

मॉरमन की पुस्तक, पहले छपी सन १८३० में, जो अभी पूरी दुनिया भर में ८० से ज्यादा भाषाओं में छपाई जा रही है ।

खड़े हो कर, मैंने गिरजाघर के स्थापित की और बहुत सी बातों की जो कि गिरजाघर से जुड़ी थी और इस वंश के व्यक्ति के बच्चों की भविष्यवाणी की थी । हम पवित्र आत्मा से भर गए और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित होने लगे ।

यह जोसफ स्मिथ की साधारण, और सीधी गवाही है, जिसमें कुछ वृतान्त दिए गए है जो सुसमाचार की पुनः स्थापना और अन्तिम दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर की स्थापना की और निर्देशित करते है ।

जोसफ स्मिथ की कहानी के पूरे वर्णन को जानना हो तो, देखिए जोसफ स्मिथ... इतिहास को जो कि अनमोल मोती या गिरजाघर के इतिहास, *१:२-७९ में है*